चिम्पैंज़ियों की सखी

जेन गुडल

आशुतोष उपाध्याय

चिम्पैंज़ियों की सखी जेन गुडल

लेखक: आशुतोष उपाध्याय

निःशुल्क वितरण हेतु ई-बुक: 2019

सभी चित्र इंटरनेट से साभार.

:: लेखक ::
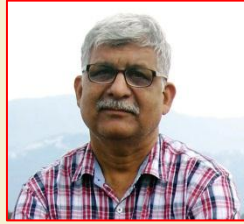
आशुतोष उपाध्याय

पत्रकार, अनुवादक और विज्ञान संचारक. विज्ञान के लोकव्यापीकरण के लिए संचालित प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन के राष्ट्रीय विज्ञान कार्यक्रम में कटेंट डेवेलपर. डॉ. डी.डी. पन्त बाल विज्ञान खोजशाला नाम से बेरीनाग (उत्तराखंड) में बच्चों के लिए एक गैर-व्यावसायिक विज्ञान केंद्र की स्थापना.

आज जब हम अपने आसपास देखते हैं तो लोगों को अपनी ही चिन्ता में डूबा हुआ पाते हैं. हर किसी का यही लक्ष्य है कि ज्यादा से ज्यादा संपत्ति, साधन और सुविधाएं जुटा ले. जो ऐसा कर लेते हैं, लोग उन्हें ज्यादा कामयाब इंसान मान लेते हैं. भले ही उनकी इस कामयाबी के लिए दूसरों को कितनी बड़ी क़ुर्बानी क्यों न देनी पड़े.

क्या आपने कभी सोचा कि इंसान जिस तरह धरती को जोतते-बोते, खोदते, गन्दा करते और बिगाड़ते हैं, उससे कितने प्राणियों को उजड़ना पड़ता है? हमारे फैलाए प्रदूषण की सबसे ज्यादा क़ीमत किसको चुकानी पड़ती है? क्या यह धरती और इसके संसाधन केवल मनुष्यों के उपभोग के लिए हैं? क्या इसमें सभी प्राणियों और उनकी आने वाली पीढ़ियों का बराबर का हिस्सा नहीं है?

इंसानी करतूतों के कारण आज धरती में जीवन का भविष्य संकट में घिरा नज़र आता है. वैज्ञानिक चेता रहे हैं कि अगर हमने अपनी आदतें नहीं बदलीं और प्रकृति का अनियंत्रित दोहन जारी रखा तो हम शायद अगली सदी का मुंह नहीं देख पाएं. वे कह रहे हैं कि हमें विकास के 'मनुष्य-केन्द्रित' दृष्टिकोण से बाहर आकर देखना चाहिए. धरती तभी उर्वरा और जीने लायक बनी रह सकती है, जब इसके संसाधनों का इसकी सभी संतानों के बीच न्यायपूर्ण बंटवारा होगा.

आज धरती को बचाने की मुहिम जुटे वैज्ञानिकों में एक बड़ा नाम है मशहूर वानरविद जेन गुडल का. जेन गुडल ने अपने जीवन के 40 साल चिम्पैंज़ियों को जानने-समझने और बचाने की ख़ातिर अफ़्रीका के जंगलों में बिता दिए. उनके काम की बदौलत आज हम मनुष्य के इस सबसे क़रीबी रिश्तेदार के बारे में बहुत कुछ जानते हैं. जेन को जानना प्रकृति की गोद में वापस लौटने जैसा है. आज हम जेन गुडल की कहानी सुनेंगे.

वैलरी जेन मॉरिस गुडल का जन्म 3 अप्रेल 1934 को लन्दन में हुआ था. उनके पिता का नाम मॉर्टिमर हर्बर्ट मॉरिस-गुडल था और वह एक कारोबारी थे. मां मार्गरिट मायफेनवे जोसेफ़ उपन्यास लिखा करती थीं. जेन जब मुश्किल से डेढ़ साल की थीं तो लन्दन के चिड़ियाघर में पहली बार किसी चिम्पैंज़ी शिशु का जन्म हुआ. जेन के पिता ने इस अवसर पर अपनी बेटी को एक छोटा सा खिलौना चिम्पैंज़ी लाकर दिया, जिसका नाम उन्होंने 'जुबली' रख दिया. तब कौन जानता था कि पिता का यह छोटा सा तोहफ़ा जेन को दुनिया का सबसे बड़ा चिम्पैंज़ी विशेषज्ञ बना देगा. उनकी मां की एक सहेली इस खिलौने को देख के बुरी तरह डर गईं. सहेली को लगा कि यह खिलौना जेन को सपनों में आकर डराएगा! मगर जेन कहती हैं कि जानवरों के प्रति उनके अगाध प्रेम की वजह यह खिलौना ही था. आज 83 साल बाद भी 'जुबली' चिम्प उनकी टेबल पर बैठा मुस्कराता रहता है.

जेन जब 10 साल की हुईं तो उन्हें किताबें पढ़ने का चस्का लग गया. ख़ास तौर पर जंगल के बारे में लिखी किताबों का. उनके पास बहुत थोड़े पैसे होते थे. इसलिए वे पुरानी किताबों की दुकान से सेकेण्ड हैंड किताबें ख़रीद लातीं और एक पेड़ की डाल पर बैठकर पढ़तीं. एक बार एक ज़बर्दस्त किताब उनके हाथ लगी. इस किताब को पूरी ख़त्म करने पर ही वह पेड़ से उतरीं. यह किताब थी- 'टार्ज़न ऑफ़ द एप्स' और इसके बाद तो उन्हें टार्ज़न से प्यार हो गया. ऐसे ही 'द स्टोरी ऑफ़ डॉक्टर डूलिटिल' नाम की किताब पढ़कर वह अफ़्रीका जाने के ख्व़ाब देखने लगीं. डॉ. डूलिटिल इस किताब का नायक था जो अफ़्रीका के जंगलों में घूमा करता था और जानवरों से बात कर लेता था. जेन सोचती थीं कि काश वह भी अफ़्रीका के जंगलों में जानवरों के बीच रह पातीं.
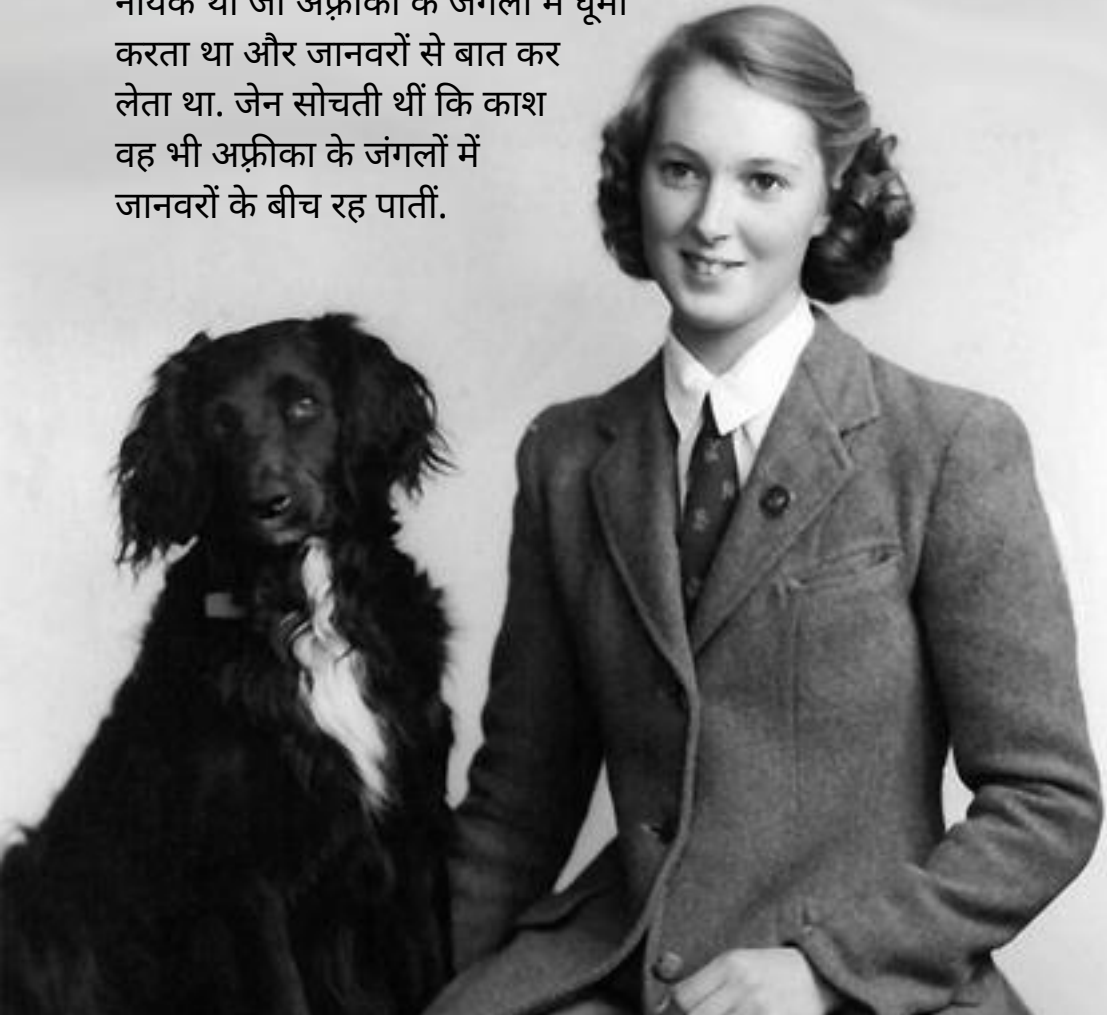
जेन जब 12 साल की थीं तो उनके माता-पिता अलग हो गए. मां के पास गुज़ारे भर को पैसे होते थे. 16 वर्ष की आयु में जेन ने हाईस्कूल की परीक्षा पास की. आगे कॉलेज की पढ़ाई के लिए पैसे नहीं थे. घर चलाने के लिए उन्होंने कई तरह की नौकरियां कीं. कुछ समय जेन सेक्रेटरी का काम करती रहीं.

1956 में उनकी एक दोस्त ने उन्हें अफ़्रीकी देश केन्या में अपने फार्महाउस में घूमने का न्योता दिया. पैसे कमाने के लिए जेन ने वेट्रेस की नौकरी की. पांच महीने के भीतर उन्होंने इतने पैसे जुटा लिए कि समुद्री टिकट लेकर वह अपनी दोस्त के पास केन्या जा सकती थीं. 1957 में जेन का सपना साकार हुआ और वह केन्या पहुंच गईं.

जेन को अफ़्रीका इतना भाया कि उन्होंने वहीं रहने का फ़ैसला कर लिया. वन्य जीवन में गहरी रुचि के कारण उनकी मुलाक़ात जाने-माने पुरातत्वविद प्रोफ़ेसर लुईस लीकी से हुई. प्रो. लीकी उन दिनों वानरों व मनुष्य का तुलनात्मक अध्ययन कर रहे थे. अपनी रुचियों के प्रति जेन के समर्पण को देखकर प्रो. लीकी ने उन्हें अपने साथ काम करने का प्रस्ताव दिया. प्रो. लीकी को ऐसे व्यक्ति की तलाश थी जो जंगल में रहने वाले चिम्पैंज़ियों के व्यवहार का बारीकी से अध्ययन कर सके. जेन से मिलकर उन्हें लगा कि यह लड़की इस काम के लिए सबसे अच्छी रहेगी. प्रो. लीकी मानते थे कि जंगल में रहकर शोध करने के मामले में पुरुषों की तुलना में ज्यादा धैर्यवान महिलाएं बेहतर साबित होती हैं. जेन की तो जैसे मन मांगी मुराद पूरी हो गई! जंगल में रहने से पहले जेन कुछ दिन के लिए लन्दन आईं ताकि यहां चिड़ियाघर में रह रहे चिम्पैंज़ियों के व्यवहार को थोड़ा-बहुत समझ सकें. इस बीच प्रो. लीकी ने जेन की पगार भी बढ़ा दी ताकि वह निश्चिन्त होकर अपना काम कर सकें.

1960 में 26 वर्ष की उम्र में जेन गुडल नैरोबी से करीब 1000 किमी दक्षिण पश्चिम में तनज़ानियाई गोम्बे नेशनल पार्क के घने जंगलों में पहुंच गईं. यहां 20-30 वर्ग किमी के दायरे में करीब 150 चिम्पैंज़ी रहा करते थे. जेन को उन्हें अपनी मौज़ूदगी की आदत डालने में महीनों लग गए. वह धूप-बारिश की परवाह किए बिना पूरा-पूरा दिन दूर से उन्हें देखती रहतीं. धीरे-धीरे चिम्पैंज़ी उनकी मौजूदगी के अभ्यस्त हो गए और उन्हें अपने नज़दीक आने देने लगे.

इस तरह जेन ने चिम्पैंज़ियों के व्यवहार पर अपना अध्ययन शुरू किया था. उनके लिए यह बिलकुल नया क्षेत्र था. न ही उनके पास इस तरह के काम का कोई प्रशिक्षण था. एक तरह से जेन को इस बात का फ़ायदा ही हुआ. चिम्पैंज़ियों पर नज़र रखने और उनके व्यवहार को रिकॉर्ड करने के उन्होंने अपने ख़ास तरीके खोज निकाले. जेन हरेक चिम्पैंज़ी को एक नाम देकर उसके व्यवहार पर नज़र रखने लगीं. उनका तरीका जीवों के वैज्ञानिक नामकरण के परंपरागत तरीके से बिलकुल अलग था.
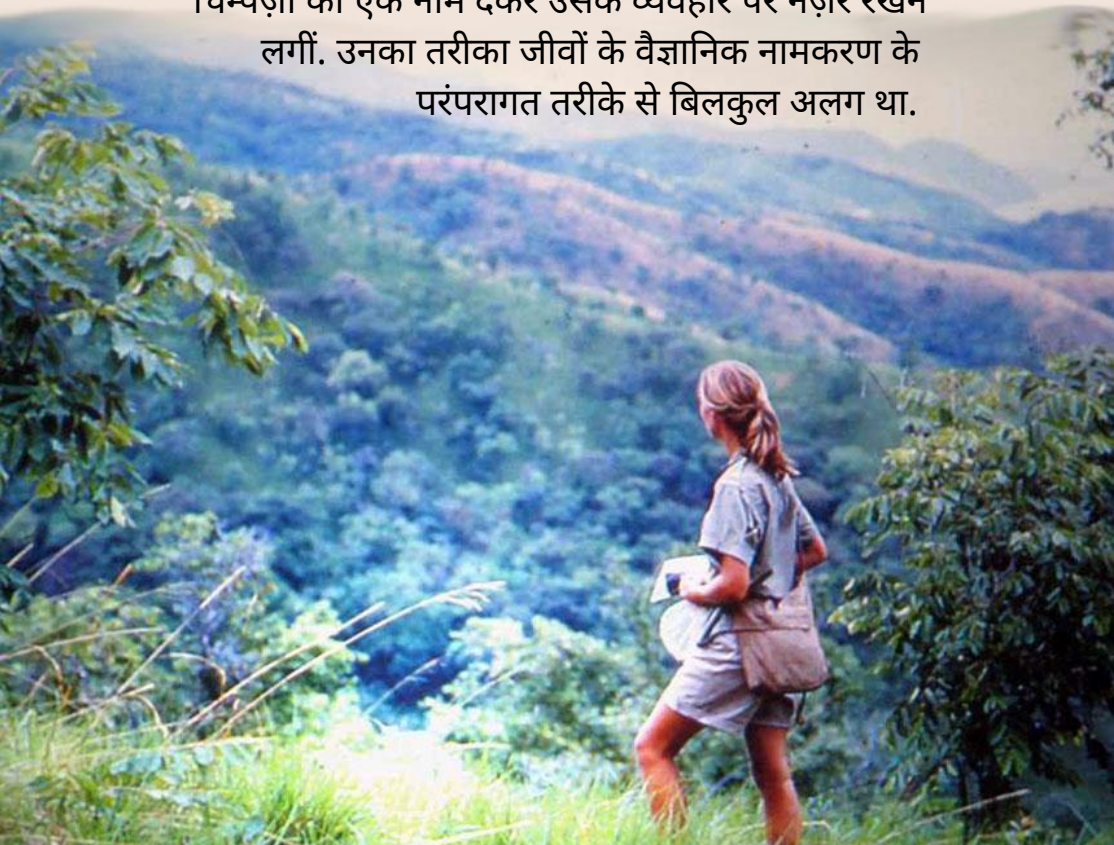
जहां अन्य वैज्ञानिक जानवरों को नंबर से पहचानते थे, जेन ने हरेक चिम्पैंज़ी को उसके व्यक्तित्व के अनुरूप नाम दिया. शुरू-शुरू में चिम्पैंज़ी उनसे डरते थे और उन्हें देखकर भाग जाते थे. जिस बूढ़े चिम्पैंज़ी से सबसे पहले उनकी दोस्ती हुई उसका नाम उन्होंने डेविड ग्रेबियर्ड रखा था क्योंकि उसकी ठुड्डी के बाल सफ़ेद पड़ने लगे थे.

ग्रेबियर्ड भोजन की तलाश में अकसर जेन के तम्बू तक पहुंच जाता था. एक बार जब ग्रेबियर्ड उनके करीब पहुंचा तो जेन ने एक केला उसे दिखाते हुए अपनी कमीज़ में छुपा लिया. ग्रेबियर्ड ने पास आकर उनकी कमीज़ से केला निकाल लिया. अब वह जेन से बिलकुल नहीं डरता था. बाद में वह उन्हें अपने परिवार से मिलाने भी ले गया. इस तरह जेन की जान-पहचान परिवार के बाकी सदस्यों गीगी, मिस्टर मैकग्रेगर, गोलियथ, फ्लो और फ्रोडो से भी हो गई.

अब जेन पूरा दिन इस चिम्पैज़ी परिवार के साथ बिताने लगीं. वह बड़े ध्यान से इसके सदस्यों की हरकतों को देखती और नोट करती रहती थीं. इस परिवार ने उन्हें अपने सदस्य के रूप में स्वीकार कर लिया था. जेन पूरे दो साल तक इस परिवार के साथ रहीं और उन्होंने चिम्पैंज़ियों के बारे में अब तक अज्ञात कई बातों को उजागर किया.

अब तक माना जाता था कि चिम्पैंज़ी शाकाहारी होते हैं. लेकिन चिम्पैंज़ियों के साथ रहते हुए जेन ने देखा कि किस तरह डेविड ग्रेबियर्ड का परिवार शिकार को घेरकर मारता है और उसका मांस खाता है. उनकी इस खोज पर शुरू में वैज्ञानिकों को विश्वास नहीं हुआ. लेकिन जेन के सबूत इतने मज़बूत थे कि उन्हें ग़लत साबित करना असंभव था.

इसी तरह जेन ने ही सबसे पहले यह पता लगाया कि चिम्पैंज़ी भी इंसानों की तरह औज़ारों का इस्तेमाल कर लेते हैं. उन्होंने देखा कि चिम्पैंज़ी दीमकों को खाने के लिए लकड़ी की तीली की मदद से उन्हें बांबी से बाहर निकालते हैं. इसके लिए पहले वे लकड़ी को छीलकर उसे तीली की शक्ल देते हैं. इससे पहले माना जाता था कि सिर्फ इंसान ही औज़ारों का इस्तेमाल कर सकते हैं.

चिम्पैंज़ियों के क़रीब रहकर जेन ने पाया कि इंसानों की तरह उनके भी अलग-अलग व्यक्तित्व के होते हैं. कुछ दयालु, शांत और परोपकारी होते हैं तो कुछ झगड़ालू व आक्रामक. इसके अलावा वे ख़ुशी, गुस्सा और उदासी जैसे भाव भी प्रकट करते हैं. इस तरह ग्रेबियर्ड की दोस्ती ने जेन के लिए चिम्पैंज़ियों के जीवन और उनकी आदतों के बारे में गहराई से जानने का मौका दिया.

1962 में जेन प्रो. लीकी की सलाह पर अपनी पढ़ाई पूरी करने की ख़ातिर कुछ दिनों के लिए जंगल से बाहर आईं. उन्होंने कैम्ब्रिज विश्विद्यालय में दाख़िला लिया और पीएच.डी. की डिग्री हासिल की. अब तक उनका नाम और काम काफ़ी शोहरत हासिल कर चुका था. वह चाहतीं तो किसी नामी विश्वविद्यालय में पढ़ाते हुए आराम की ज़िन्दगी बिता सकती थीं. लेकिन जेन तो जैसे जंगल के लिए ही पैदा हुई थीं. वह चिम्पैंज़ियों के अपने परिवार में वापस लौट आईं.

लेकिन अब चिम्पैंज़ियों के जीवन में मुसीबतों के बादल मंडराने लगे थे. गोम्बे के जंगलों पर धन पशुओं की नज़र लग गई थी. औद्योगिक ज़रूरतों के लिए बड़े पैमाने पर पेड़ काटे जा रहे थे. चिम्पैंज़ियों की रिहायश का इलाक़ा सिकुड़ने लगा था. शिकारी उन्हें मारते थे और उनके बच्चों को चिड़ियाघरों या शौक़िया शहरियों को ऊंची क़ीमत पर बेच डालते थे. जेन को लगा कि चिम्पैंज़ियों को अगर बचाया नहीं गया तो वे पूरी तरह ख़त्म हो जाएंगे.

चिम्पैंज़ियों के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए वह दुनिया भर में घूमने लगीं. उन्होंने सरकारों को चेताया और वन्य जीवों के संरक्षण के लिए अपील की. जेन ने चिम्पैंज़ियों पर कई किताबें लिखीं. 1977 में उन्होंने वन्य जीवों के संरक्षण के लिए जेन गुडल इंस्टिट्यूट की स्थापना की. आज यह संस्था चिम्पैंज़ियों व वन संरक्षण के लिए बड़े स्तर पर अभियान चलाती है.

1991 में जेन ने तनज़ानिया में 12 बच्चों के साथ 'रूट्स एंड शूट्स' कार्यक्रम की शुरुआत की. आज 120 से ज्यादा देशों के बच्चे इस अभियान के सदस्य हैं जो धरती में जीवन को बचाए रखने के लिए अनेक तरह के जागरूकता अभियान चलाते हैं. जेन अब भी तनज़ानिया के जंगलों में जाती हैं और अपने भविष्य से अनजान चिम्पैंज़ियों की नई पीढ़ी को किलकारियां भरते हुए देखती रहती हैं.